आर्य स्थूलभद्र

मगध की राजधानी थी पाटलिपुत्र। गंगा तट पर बसे इस सुन्दर नगर में विशाल राजमहल, श्रेष्ठियों के ऊँचे-ऊँचे भवन तथा अनेक भव्य जिन मन्दिर, शिव मन्दिर शोभायमान थे। नन्द वंश के नवम नन्द धननन्द यहाँ के राजा थे। शकडाल उनके महामंत्री थे।

एक दिन महामंत्री शकडाल राजसभा के लिए तैयार होकर घर से निकले तो उनके दोनों पुत्र भी जिद्द करने लगे—

पिताश्री, हम भी आपके साथ महाराज के दर्शन करने चलेंगे।

अच्छा भाई, तुम दोनों भी चलो, यही तो कल्पक वंश की परम्परा है।

दोनों पुत्र शकडाल के साथ राजसभा में जाने के लिए चल पड़े।

शकडाल ने राजसभा में प्रवेश कर महाराज को प्रणाम किया। दोनों बालकों ने भी प्रणाम किया–
मैं कल्पक वंशीय महामंत्री शकडाल-पुत्र प्रियंकर महाराज को प्रणाम करता हूँ।
मेरा नाम श्रीयंकर है, मेरा प्रणाम स्वीकारें।
वाह! बड़े सुन्दर और संस्कारी हैं दोनों बालक।

राजा ने प्रियंकर को पास बुलाकर सिर पर हाथ फिराया। उसका सुन्दर स्थूल शरीर देखकर राजा को मजाक सूझा–
क्या खाते हो वत्स?
माता के हाथ के मोदक।

राजा ने हँसकर कहा–
तभी तो इतने स्थूल (मोटे) हो गये हो।
इसकी स्थूलता भी बड़ी भद्र (अच्छी) लगती है। क्यों मंत्रीवर!

तभी तो घर पर सब इसको स्थूलभद्र कहते हैं।
हम भी तुम्हें स्थूलभद्र कहें?
महाराज की जैसी इच्छा!
इसके पश्चात् महाराज ने दोनों बालकों को अनेक प्रकार के उपहार आदि देकर विदा किया।

श्रीयंकर के बाद क्रमशः लक्ष्मीदेवी ने सात पुत्रियों को जन्म दिया। जिनके नाम थे-यक्षा, यक्षादिन्ना, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा और रेणा।

स्थूलभद्र आठ वर्ष का हुआ। शकडाल ने पत्नी से कहा—

स्थूलभद्र को शिक्षा के लिए तक्षशिला के गुरुकुल भेजना चाहिए। वहाँ अनेक राजाओं के राजकुमार शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

हाँ स्वामी, ऐसी तीव्र बुद्धि वाले बालक को गुरु भी बृहस्पति के समान ही मिलना चाहिए।

शुभ मुहूर्त्त में स्थूलभद्र को अध्ययन के लिए तक्षशिला गुरुकुल में भेजा गया। वहीं पर एक तीक्ष्ण बुद्धि ब्राह्मणकुमार से उसका परिचय हुआ। स्थूलभद्र ने उससे पूछा—

मित्र! तुम कहाँ से आये हो?

मैं गौल्लभ प्रदेश के चणकपुर के चणी विप्र का पुत्र हूँ। मेरी माँ का नाम है चणकेश्वरी! मेरा नाम है विष्णुगुप्त। किन्तु मुझे सब चाणक्य नाम से ही जानते हैं।

अच्छा, तुम्हारा यह दाँत ऐसा क्यों हो गया?

मेरी माँ कहती है, जन्म से ही मेरे मुँह में यह दाँत निकल आया था। मेरे मुँह में दाँत देखकर एक निर्ग्रन्थ श्रमण ने बताया कि तुम्हारा पुत्र तो कोई राजेश्वरी बनेगा।